10

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली
एक सहक्रियात्मक पहल

अभिषेक वैभव*
मैनाक बनर्जी**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली के बीच सहक्रियात्मक संबंध भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। लेख में बताया गया है कि एन.ई.पी. 2020 केवल आधुनिक वैश्विक मानकों पर आधारित शिक्षा प्रणाली की बात नहीं करता बल्कि वह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और दार्शनिक परंपराओं को शिक्षा के साथ जोड़ने पर भी बल देता है। आई.के.एस. में वेद, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, गणित, स्थापत्य, लोक कलाएँ, भारतीय भाषाएँ, नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल जैसी विविध ज्ञान-परंपराएँ शामिल हैं। लेख के अनुसार, नई शिक्षा नीति इन विषयों को शिक्षा के सभी स्तरों पर स्थान देने की वकालत करती है, ताकि विद्यार्थियों में जिम्मेदारी, रचनात्मकता, जिज्ञासा और भारतीयता का भाव विकसित हो। इसके लिए शिक्षक-प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या निर्माण, मूल्यांकन प्रणाली और शोध गतिविधियों में भी बदलाव आवश्यक हैं। लेख में सुझाव दिया गया है कि डिजिटल सामग्री विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रम, अंतरविषयक अनुसंधान और आई.के.एस. केंद्रों की स्थापना जैसे प्रयासों से इस लक्ष्य की पूर्ति की जा सकती है। अंततः यह पहल न केवल भारतीय शिक्षा को समृद्ध बनाएगी, बल्कि आत्मनिर्भर और वैश्विक स्तर पर सक्षम नागरिक भी तैयार करेगी।

भारत की समृद्ध परंपराओं और वैश्विक चुनौतियों को साथ लेकर चलने के उद्देश्य से, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा के क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। इस नीति का एक प्रमुख आधार है— भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) को शिक्षा की मुख्यधारा में एकीकृत करना। यह पहल न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करेगी, बल्कि विद्यार्थियों को समग्र और बहुआयामी ज्ञान से सशक्त बनाकर उन्हें 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार भी करेगी।

भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारत की पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था की गहराइयों से जुड़ी हुई है जिसकी विशेषता रही है— गुरु-शिष्य परंपरा। इस व्यवस्था में शिक्षक और विद्यार्थी साथ रहते थे और शिक्षण प्रक्रिया संवाद, पर्यावरण के साथ जुड़ाव, ध्यान, प्रयोग, प्रश्नोत्तर शैली और मूल्यों के अभ्यास के माध्यम से

**सहायक प्राध्यापक* (अर्थशास्त्र विभाग), आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड) 834 004
***सहायक प्राध्यापक* (प्राणी विज्ञान विभाग), आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड) 834 004

होती थी। विद्यार्थी को जीवन के वास्तविक अनुभवों, स्थानीय परिवेश, आत्म-चिंतन, जीवन-कौशल और मूल्यों से जोड़कर शिक्षा दी जाती थी जिससे वह व्यावहारिक रूप से समृद्ध बनता था। इसी परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करने हेतु, एन.ई.पी. 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को नीति में एक वैचारिक मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में ज्ञान, विज्ञान और जीवन-दृष्टि सम्मिलित हैं जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण के माध्यम से विकसित हुई हैं।

यह ज्ञान परंपरा शिक्षा, कला, शासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, निर्माण और व्यापार सहित हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को आकार देती रही है। इसने भारत की शास्त्रीय एवं लोक भाषाओं को भी प्रभावित किया है जो मौखिक, सांगीतिक और कलात्मक परंपराओं के माध्यम से संरक्षित रही हैं। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल प्राचीन ग्रंथों या धार्मिक धारणाओं तक सीमित नहीं है, अपितु यह एक समग्र, जीवनोन्मुखी और अनुभव-आधारित दृष्टिकोण है।

एन.ई.पी. 2020 इस बात को मान्यता देती है कि भारत की विविधता में निहित ज्ञान का विद्यार्थियों को प्राप्त होना अत्यंत आवश्यक है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों को भारत के विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक यात्राएँ करवाई जाएँ। जिससे वे विविध परंपराओं, मान्यताओं और ज्ञान पद्धतियों की समझ और सम्मान विकसित कर सकें। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत देश के 100 प्रेरणा स्थलों की पहचान की जाएगी। विद्यार्थियों को इन स्थलों और उनसे जुड़ी वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, भाषिक और ऐतिहासिक विशेषताओं को जानने के लिए प्रेरित किया जाएगा। इस पहल से विद्यार्थियों में न केवल जिज्ञासा बढ़ेगी, बल्कि भारतीयता की अनुभूति भी गहराएगी।

भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विद्यालय और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसमें स्वदेशी ज्ञान, लोक परंपराएँ, प्राचीन तकनीकी विधियाँ और जीवन-कौशल की विविध धाराएँ सम्मिलित हैं। जैसे—गणित, ध्वनि-विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, अभियांत्रिकी, भाषाविज्ञान, साहित्य, संगीत, खेल, शासन और संरक्षण। ये सभी ज्ञान-वृत्तियाँ शिक्षा को केवल पुस्तकीय न बनाकर जीवनोपयोगी और परिवेश-संगत बनाएँगी। इस समावेशन से शिक्षा एक व्यावहारिक, सृजनात्मक और जड़ों से जुड़ी प्रक्रिया बनेगी।

एन.ई.पी. 2020 यह भी मानती है कि भारत की विविधता और सांस्कृतिक गहराई विद्यार्थियों को समझ में आए, इसके लिए उन्हें विभिन्न अनुभवात्मक गतिविधियों से जोड़ा जाए। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को भारत भ्रमण, स्थानीय इतिहास, पारंपरिक कलाएँ, लोकगीत, स्थानीय भाषा और ज्ञान के विविध रूपों से जोड़ने पर बल दिया गया है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को जीवंत, सृजनशील और समावेशी बनाएगा।

अंततः, भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल ग्रंथों या आस्थाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, विज्ञान और जीवन-दृष्टि का वह विशाल भंडार है जो हजारों वर्षों के अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और विश्लेषण

का परिणाम है। इसमें वेदों, उपनिषदों, पुराणों, लोक मान्यताओं, दर्शनों, योग, ज्योतिष, गणित, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, कला और साहित्य जैसे अनेक क्षेत्र सम्मिलित हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली जीवन के हर पहलू से जुड़ती है, सुबह जागने से लेकर पृथ्वी माता को नमन करने तक, भोजन करने से लेकर पारिवारिक मूल्यों और आध्यात्मिक साधना तक। भारतीय ज्ञान प्रणाली हमें केवल तथ्य नहीं सिखाती, बल्कि जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति और सामूहिक रूप से जीने का मार्ग भी दिखाती है। एन.ई.पी. 2020 के माध्यम से जब यह प्रणाली शिक्षा में समाहित होगी, तब भारत की शिक्षा एक बार फिर ज्ञान, मूल्य और नवाचार से समृद्ध बनेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि भारत की प्राचीन और समृद्ध ज्ञान परंपरा इस नीति के लिए एक मार्गदर्शक के रूप मे प्रकाश स्तंभ रही है। इसका प्रमुख उद्देश्य यह है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार परिवर्तित किया जाए जिससे वह विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक बने। इस दिशा में, भारतीय ज्ञान प्रणाली आई.के.एस. को पाठ्यक्रम की एक महत्त्वपूर्ण इकाई के रूप में सम्मिलित किया गया है। यह नीति ज्ञान, बुद्धिमत्ता और सत्य की खोज को मानवीय उद्देश्य का केंद्र मानती है जो भारतीय चिंतन परंपरा की मूल भावना रही है। इस नीति के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण से जुड़े कुछ प्रमुख पक्षों को इस प्रकार समझा जा सकता है।

समग्र और बहु-विषयी शिक्षा— राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक विषयों के साथ जोड़कर एक समग्र और बहु-विषयी दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है। इसका तात्पर्य है कि विद्यार्थी न केवल पश्चात विज्ञान सीखें, बल्कि वे भारत के प्राचीन विज्ञान और दर्शन को भी समझें। समग्र शिक्षा का आशय केवल अकादमिक ज्ञान नहीं, बल्कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास से है जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक, शारीरिक तथा व्यावहारिक क्षमताएँ सम्मिलित हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का बहुविध दृष्टिकोण— भारतीय ज्ञान प्रणाली मूलतः ही समग्र और बहु-विषयी रही है। प्राचीन भारत में शिक्षा किसी एक विषय तक सीमित नहीं थी। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद केवल चिकित्सा विज्ञान नहीं था बल्कि उसमें जीवनशैली, आहार, योग और दर्शन के पहलू भी सम्मिलित थे। गणित और खगोल विज्ञान जैसे विषयों में भी वैज्ञानिकों ने समय की गणना और वास्तुशास्त्र में अपने ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग किया। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है बल्कि उसमें मानसिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक विकास के उद्देश्य निहित हैं।

ज्ञान और सृजनात्मकता का मेल— जब विभिन्न दृष्टिकोणों और विषयों को एक साथ रखा जाता है तो वह नए विचारों और समाधान को जन्म देता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में अंतर्निहित सृजनात्मकता आधुनिक नवाचारों को प्रेरित कर सकती है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच, कल्पनाशीलता और समाधान-केंद्रित दृष्टि विकसित करने में सहायक होगा।

सांस्कृतिक जुड़ाव और पहचान— भारतीय ज्ञान प्रणाली विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत से जोड़ती है। इससे उनमें राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक पहचान की भावना उत्पन्न होती है। यह उन्हें केवल विश्व नागरिक ही नहीं, बल्कि एक सजग भारतीय भी बनाता है जो अपने अतीत से जुड़कर भविष्य की ओर अग्रसर होता है।

यथार्थ समस्याओं के समाधान की तैयारी— वास्तविक जीवन की समस्याएँ प्रायः बहु-आयामी होती हैं। एक समग्र और बहु-विषयी दृष्टिकोण विद्यार्थियों को इन जटिलताओं को समझने और समाधान खोजने के लिए तैयार करता है। उदाहरणस्वरूप, पर्यावरण विज्ञान पढ़ते समय यदि विद्यार्थी पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणालियों (जैसे —गढ़ीपैक प्रणाली) का अध्ययन करें तो वे आज के संदर्भ में स्थायी समाधान के बारे में सोच सकते हैं।

व्यक्तिगत और नैतिक विकास— भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देती है। इसके एकीकरण से विद्यार्थियों में नैतिकता, सह-अस्तित्व, आत्मनियंत्रण और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुणों का विकास होता है। यह उन्हें केवल अच्छे पेशेवर नहीं, बल्कि अच्छे नागरिक और संवेदनशील मानव भी बनाता है।

व्यापक प्रभाव— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश एक दूरदर्शी कदम है। यह हमें केवल पश्चिमी मॉडल का अनुकरण करने से रोकता है और अपनी सांस्कृतिक गहराइयों से प्रेरणा लेकर ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करने की ओर अग्रसर करता है जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक जड़ों से भी गहराई से जुड़ी हो।

प्राचीन भारतीय गणित को आधुनिक पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के तरीके

प्राचीन भारतीय गणित का एकीकरण केवल 'वैदिक गणित' तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि इसमें सिद्धांत, व्याख्याएँ और समस्या-समाधान की विधियों को भी समाहित किया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को भारतीय दशमलव स्थान-मूल्य पद्धति और शून्य की व्याख्या से परिचित कराया जा सकता है जिसमें आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानों के योगदान को उजागर किया जाए। इससे यह स्पष्ट किया जा सकता है कि यह प्रणाली पश्चिमी दुनिया में कैसे पहुँची और आधुनिक गणित की आधारशिला कैसे बनी। बीजगणित के विकास में, अनिर्धारित समीकरणों को पढ़ाते समय ब्रह्मगुप्त और भास्कर द्वितीय जैसे गणितज्ञों के योगदान को सम्मिलित किया जा सकता है। उन्होंने इन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किए जो यूरोपीय गणितज्ञों से कई शताब्दियों पूर्व किए गए थे। विद्यार्थियों को बीजगणितीय समस्याओं को हल करने के लिए प्राचीन भारतीय पद्धतियों, जैसे 'कुट्टक विधि' से अवगत कराना लाभकारी होगा। त्रिकोणमिति में, 'साइन', 'कोसाइन' और 'वर्साइन' जैसे त्रिकोणमितीय फलनों के विकास और प्रयोग पढ़ाते समय, आर्यभट्ट और उनके 'आर्यभटीय' ग्रंथ का उल्लेख किया जा सकता है। साथ ही 'साइन टेबल' के निर्माण में भारतीय योगदान और

खगोल विज्ञान में त्रिकोणमिति के अनुप्रयोग को भी जोड़ा जा सकता है। ज्यामिति में, पाइथागोरस प्रमेय (जो भारत में 'बौधायन प्रमेय' के रूप में जाना जाता है), त्रिकोणीय निर्माण और विभिन्न आकारों के क्षेत्रफल तथा आयतन की गणना पढ़ाते समय, शुल्ब सूत्रों और भास्कराचार्य द्वितीय के कार्यों को रेखांकित किया जा सकता है। विद्यार्थियों को प्राचीन विधियों से स्वयं ज्यामितीय आकृतियों के निर्माण के लिए प्रेरित करना व्यावहारिक समझ को बढ़ा सकता है।

कैलकुलस की अवधारणाएँ, जैसे— अनंत श्रेणी, अवकलन और समाकलन, उच्च कक्षाओं में पढ़ाते समय, केरल स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स और उनके गणितज्ञों, जैसे माधव द्वारा न्यूटन और लाइबनिट्ज से पहले विकसित इन अवधारणाओं का उल्लेख किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि कैसे भारतीय गणितज्ञों की सोच आधुनिक कैलकुलस के सिद्धांतों से मेल खाती है। इसके अतिरिक्त, भारतीय गणित से प्रेरित पहेलियाँ और खेल जैसे कि भास्कर द्वितीय द्वारा लिखी गई 'लीलावती' की पहेलियाँ, कक्षा में रचनात्मक गतिविधियों के रूप में प्रयुक्त की जा सकती हैं। यह गतिविधियाँ समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देगी।

अंत में, प्रत्येक गणितीय अवधारणा को पढ़ाते समय उसके भारतीय स्रोत और विकास का ऐतिहासिक संदर्भ देना चाहिए। इसके लिए, भारतीय गणितज्ञों की जीवनी और उनके योगदानों को छोटी परियोजनाओं या प्रस्तुतियों के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा करवाया जा सकता है। यह न केवल गणितीय आत्मविश्वास को बढ़ाएगा, बल्कि विद्यार्थियों में अपनी विरासत के प्रति गौरव का भाव भी जागृत करेगा।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का एकीकरण

प्राचीन भारतीय गणित और धातुकर्म के एकीकरण से विद्यार्थियों को न केवल अपने गौरवशाली अतीत से जुड़ने का अवसर मिलेगा बल्कि उनकी सोचने-समझने की क्षमता, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण तथा सांस्कृतिक आत्मगौरव की भावना भी विकसित होगी। गणित के क्षेत्र में शून्य की अवधारणा, बीजगणित, त्रिकोणमिति तथा फलन जैसे विषयों के विकास ने आधुनिक गणित की नींव रखी और इन्हें पढ़ाते समय यदि प्राचीन भारतीय योगदानों को सम्मिलित किया जाए तो विद्यार्थियों में समस्याओं के समाधान की विविध दृष्टिकोणों से समझ उत्पन्न होगी। वहीं, धातुकर्म के क्षेत्र में भारत की पारंपरिक तकनीकों— जैसे वूट्ज स्टील, जस्ता निष्कर्षण, मिश्र धातुओं का निर्माण तथा लौह व तांबा शोधन आदि ने विज्ञान, कला और शिल्प का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया है। इन ऐतिहासिक उपलब्धियों को आधुनिक पाठ्यक्रम से जोड़ना न केवल विद्यार्थियों में वैज्ञानिक समझ बढ़ाएगा, बल्कि यह भी बताएगा कि भारतीय विज्ञान परंपरा केवल पौराणिक नहीं, अपितु व्यावहारिक और नवाचार-सम्पन्न रही है। इस प्रकार का एकीकरण भारतीय ज्ञान परंपरा का सम्मान करते हुए आधुनिक शिक्षा को अधिक समग्र, प्रासंगिक और प्रेरणादायक बनाएगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुसंधान और नवाचार की भूमिका

भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुसंधान और नवाचार को सदैव महत्व दिया गया है। आज के परिप्रेक्ष्य में भी आयुर्वेद, योग, प्राचीन धातु विज्ञान, नगर नियोजन और जल संसाधन प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके लिए भारत सरकार ने देशभर में 32 भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र स्थापित किए हैं जिनका प्रमुख उद्देश्य गहन एवं व्यवस्थित अनुसंधान, प्राचीन ग्रंथों और पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण, वैज्ञानिक सत्यापन, ज्ञान का प्रसार तथा क्षमतावान शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देना है। ये केंद्र भारत की सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने के साथ-साथ 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान प्रदान करने में भी सक्षम हो रहे हैं।

प्राचीन ज्ञान परंपरा का अनुसंधान आज की जटिल समकालीन समस्याओं— जैसे स्वास्थ्य, पर्यावरण और शहरी विकास— के समाधान की दिशा में नए आयाम प्रस्तुत कर रहा है। उदाहरणस्वरूप, आयुर्वेद एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को योग के माध्यम से हर्बल औषधियों का वैज्ञानिक मानकीकरण और उपचारात्मक प्रयोग किए जा रहे हैं। योग पर वैज्ञानिक अनुसंधान मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान दे रहे हैं। प्राचीन धातु विज्ञान, जैसे— वूट्ज स्टील और मिश्र धातु निर्माण, आधुनिक सामग्री विज्ञान में नवीन समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। नगर नियोजन और वास्तुकला के क्षेत्र में हड़प्पा सभ्यता की जल निकासी व्यवस्था तथा पर्यावरण-संवादी वास्तुशास्त्र आज के स्मार्ट सिटी और आपदा प्रबंधन के लिए प्रेरणास्रोत हैं। इसी प्रकार, प्राचीन जल-संरक्षण पद्धतियों का अध्ययन जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों में स्थानीय समाधान विकसित करने की दिशा में सहायक हो सकता है। इन अनुसंधानों से केवल शुद्ध वैज्ञानिक या तकनीकी लाभ नहीं होता बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं वैश्विक स्तर पर भारत की भूमिका को भी सुदृढ़ करता है। यह प्रयास भारत की बौद्धिक परंपरा को पुनर्जीवित कर उसे वैज्ञानिक मानकों पर परखने और वैश्विक पटल पर प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम बनता जा रहा है। यह नवाचार आधारित पुनर्जागरण युवाओं में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है, उन्हें वैज्ञानिक शोध की ओर प्रेरित करता है और उस सांस्कृतिक गौरव से जोड़ता है।

मूल्य-आधारित शिक्षा और भारतीय ज्ञान प्रणाली

भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करती है, बल्कि इसे आज भी शिक्षा के मूल में स्वीकार किया गया है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य मात्र तथ्यात्मक ज्ञान देना नहीं था, बल्कि गुरु-शिष्य संबंधों के माध्यम से चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी पोषित करना था। यह मूल्य-आधारित शिक्षा आज भी यह स्पष्ट करती है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं या कर सकते हैं उससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे कैसे इंसान बन रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दृष्टिकोण को पुनर्जीवित करती है और ऐसे नागरिकों को तैयार करने पर बल देती है जो

अपनी जड़ों से जुड़े, वैश्विक नागरिक हों और जिनमें मानवीय मूल्य गहरे समाहित हों। भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख मूल्य, जैसे— आत्मनिर्भरता जो आज के आर्थिक और बौद्धिक परिप्रेक्ष्य में नवाचार व उद्यमिता की भावना को बढ़ाती है; 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे विचार जो समानुभूति और सांस्कृतिक सहिष्णुता की प्रेरणा देते हैं; रचनात्मकता और जिज्ञासा, जो विद्यार्थियों में नवोन्मेषी सोच को जन्म देते हैं; ईमानदारी और सत्यनिष्ठा जो व्यक्तित्व की नींव रखते हैं तथा पर्यावरण चेतना जो विद्यार्थियों को पृथ्वी प्रकृति और संसाधनों के प्रति संवेदनशील बनाती है ये सभी आज की शिक्षा में अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान वैश्विक और जटिल परिवेश में इन मूल्यों को शिक्षा में समाहित करना विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान संपन्न, बल्कि जिम्मेदार, नैतिक और संवेदनशील नागरिक बनाने के लिए आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा में मूल्यों का एकीकरण

भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित मूल्य न केवल हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन का आधार हैं, बल्कि आज की शिक्षा व्यवस्था में भी इन्हें समाविष्ट करना अत्यंत आवश्यक है। यह एकीकरण केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि इन मूल्यों को विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास की प्रक्रिया का सक्रिय भाग बनाना होगा। इसके लिए पाठ्यचर्या में एकीकरण की दृष्टि से विभिन्न विषयों में भारतीय दृष्टिकोण आधारित उदाहरणों, कहानियों और प्रकरण-अध्ययन का समावेश किया जा सकता है। साथ ही, अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देते हुए योग, ध्यान, सेवा कार्य, प्रकृति के प्रति संवेदनशील गतिविधियाँ और कला-संगीत जैसी सृजनात्मक विधाओं के माध्यम से मूल्यों को गहरे रूप में आत्मसात कराया जा सकता है। शिक्षकों की भूमिका इसमें अत्यंत महत्वपूर्ण है— उन्हें स्वयं इन मूल्यों को आत्मसात कर प्रभावी रूप से कक्षा में प्रस्तुत करने हेतु प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, रोल मॉडल के रूप में प्राचीन और आधुनिक भारतीय विभूतियों के उदाहरण प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को प्रेरित किया जा सकता है, जिन्होंने जीवन में इन मूल्यों का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया हो। कक्षा संवादों, चर्चाओं और आत्मचिंतन आधारित गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को नैतिक दुविधाओं पर सोचने और अपने दृष्टिकोण विकसित करने के अवसर दिए जाने चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक सकारात्मक परिवर्तन का संकेत देती है जहाँ शिक्षा को केवल ज्ञान या कौशल अर्जन का माध्यम न मानकर यद्यपि उच्चतर मानवीय चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का साधन माना गया है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित मूल्य आज की शिक्षा को एक नई आत्मा दे सकते हैं— एक ऐसी शिक्षा जो ज्ञानपूर्ण हो परंतु साथ ही करुणामयी, उत्तरदायी और समरस भी हो।

भारतीय भाषाएँ और सांस्कृतिक संरक्षण भारतीय ज्ञान प्रणाली के संवाहक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं, कलाओं और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने पर विशेष बल देती है जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली का सतत

संवर्धन सुनिश्चित हो सके। भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है जहाँ प्रत्येक भाषा अपने भीतर ज्ञान, परंपराएँ, मूल्य और जीवन-दृष्टि का अनमोल भंडार समेटे हुए है। भारतीय भाषाओं के माध्यम से बच्चों को न केवल अपने परिवेश और सांस्कृतिक विरासत से जोड़ा जा सकता है, बल्कि यह उनकी अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और आत्मविश्वास को भी पोषित करती हैं। आई.के.एस. आधारित पाठ्यक्रमों में भारतीय भाषाओं को शिक्षण के माध्यम के रूप में अपनाना इस प्रणाली को जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखने की दिशा में एक सशक्त कदम हो सकता है। साथ ही, विभिन्न भाषाओं में निहित लोककथाओं, कहावतों, गीतों, शिल्पकलाओं और पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण एवं शिक्षण प्रक्रिया में उनका एकीकरण आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़े रहें और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बनें। यह संरक्षण न केवल विविधता में एकता की भावना को बल देगा, बल्कि वैश्वीकरण के दबाव में खोते जा रहे स्थानीय ज्ञान और परंपराओं को पुनर्जीवित करने का माध्यम भी बनेगा। इस प्रकार, भारतीय भाषाएँ और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ न केवल आई.के.एस. की आत्मा हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के समग्र विकास और राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण की आधारशिला भी हैं।

एन.ई.पी. 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली पर विशेष बल क्यों देती है?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात को गहराई से स्वीकार करती है कि भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान के संवाहक और रक्षक भी हैं। हमारे शास्त्र, दर्शन, विज्ञान, कलाएँ और परंपराएँ प्रायः संस्कृत, पाली, प्राकृत, तमिल, फारसी, अरबी, बांग्ला, मैथिली, मराठी, पंजाबी जैसी भारतीय भाषाओं में संकलित हैं। यदि इन भाषाओं को समुचित संरक्षण और प्रोत्साहन न दिया जाए तो भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) का एक बड़ा भाग लुप्त हो सकता है। इसके साथ-साथ शोधों से यह भी प्रमाणित हुआ है कि बच्चों के समग्र विकास के लिए मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देना सर्वाधिक प्रभावशाली होता है, विशेषकर प्राथमिक वर्षों में। यही कारण है कि नीति कक्षा 5 तक (और यथासंभव कक्षा 8 तक) मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा देने पर बल देती है। नीति यह भी स्पष्ट करती है कि जब विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक भाषाओं, कलाओं और परंपराओं से जुड़ते हैं तो उनके भीतर स्वाभाविक गर्व, आत्म-स्वीकृति और एक समेकित राष्ट्रीय पहचान का निर्माण होता है। यह न केवल सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि सांस्कृतिक विविधता में एकता की भावना भी सुदृढ करता है। एन.ई.पी. 2020 भारतीय कलाओं को केवल सहगामी गतिविधि न मानते हुए उन्हें शिक्षण का एक सशक्त साधन मानती है और कला-एकीकृत शिक्षण को बढ़ावा देती है जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक समावेशी, रुचिकर और रचनात्मक बन सके। अंततः, यह नीति स्पष्ट करती है कि यदि भारतीय ज्ञान प्रणाली को केवल कुछ भाषाओं तक सीमित रखा गया, तो इसकी पहुँच सीमित रह जाएगी। इसे सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद और प्रसार के माध्यम से लोकतांत्रिक और व्यापक बनाया जाना

आवश्यक है जिससे प्रत्येक कोने तक ज्ञान पहुँचे और यह समावेशी विकास का माध्यम बन सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषाओं और संस्कृति का समावेशन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष बल देती है। यह नीति त्रि-भाषा सूत्र को अपनाने पर बल देती है जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को न्यूनतम तीन भाषाओं में दक्ष बनाया जाएगा, जिनमें से दो भाषाएँ भारतीय होंगी। नीति यह भी निर्धारित करती है कि कक्षा 5 तक, और जहाँ संभव हो वहाँ कक्षा 8 तक, मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाया जाए जिससे विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपराओं की समझ सुलभ हो सके। संस्कृत भाषा को एक समृद्ध सांस्कृतिक स्रोत मानते हुए उसे एक जीवंत विकल्प के रूप में पुनःस्थापित किया जाएगा और इसे विद्यालयी तथा उच्च शिक्षा दोनों में प्रोत्साहित किया जाएगा। इसके साथ ही अन्य शास्त्रीय भाषाओं जैसे तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पाली, फारसी आदि और उनके साहित्य के अध्ययन को भी बढ़ावा दिया जाएगा। कला, संगीत, नाटक, कविता और चित्रकला जैसी विधाओं को पाठ्यक्रम के मुख्य भाग में सम्मिलित किया जाएगा तथा स्थानीय कलाकारों, शिक्षाविदों और विशेषज्ञों को 'मास्टर इंस्ट्रक्टर' के रूप में विद्यालयों से जोड़ा जाएगा। डिजिटल संसाधनों के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराई जाएगी, जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़ी सामग्री भी सम्मिलित होगी। साथ ही, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और कानून जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को भी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने पर बल दिया जा रहा है, ताकि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। इन सभी प्रयासों का उद्देश्य भारत की भाषिक और सांस्कृतिक विविधता को शिक्षा में समाहित करते हुए ज्ञान का विकेन्द्रीकरण और व्यापक सामाजिक समावेशन सुनिश्चित करना है।

भारतीय भाषाओं में शिक्षण — भारतीय ज्ञान प्रणाली के संवाहक के रूप में

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) के प्रभावी प्रसार और उसके गहन अध्ययन के लिए भारतीय भाषाओं को शिक्षण का माध्यम बनाना एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। यह इस कारण आवश्यक है क्योंकि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित अनेक जटिल अवधारणाएँ विद्यार्थी अपनी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में अधिक स्पष्टता और गहराई से समझ सकते हैं। अधिकांश पारंपरिक ग्रंथ, तर्कशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र आदि से संबंधित मूल स्त्रोत भाषाएँ भारतीय हैं, जैसे— संस्कृत, पालि, तमिल, अरबी-फारसी आदि। इन भाषाओं में उपलब्ध ग्रंथों को यदि मूल भाषा में पढ़ाया जाए तो विद्यार्थी न केवल उनके भावार्थ को बेहतर समझ पाएंगे बल्कि भारतीय बौद्धिक परंपरा से भी सीधे जुड़ सकेंगे। इसके अतिरिक्त, भारतीय भाषाओं में शिक्षण से विद्यार्थियों को प्राथमिक स्त्रोतों तक सीधा पहुँच प्राप्त होती है जिससे वे बिना किसी भाषायी अवरोध के मौलिक अध्ययन और अनुसंधान में प्रवृत्त हो सकते हैं। इससे भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित अनुसंधान को

भी बल मिलेगा और नवीन दृष्टिकोण विकसित होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित यह दिशा, न केवल भारत की भाषिक और सांस्कृतिक विविधता को सम्मान देती है, बल्कि एक ऐसे शिक्षित नागरिक के निर्माण की ओर अग्रसर है जो अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ हो और वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास से खड़ा हो सके।

कौशल विकास—प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, व्यावहारिक ज्ञान और एन.ई.पी. 2020

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में कौशल विकास को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। विशेषकर गुरुकुलों और विभिन्न विधा-आधारित पाठशालाओं में न केवल वैचारिक शिक्षा दी जाती थी, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए आवश्यक विविध प्रकार के कौशलों में भी प्रशिक्षित किया जाता था। यह शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में कर्तव्यबोध, आत्मानुशासन, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक सहभागिता जैसे गुणों को विकसित करने पर केंद्रित थी। प्राचीन शिक्षा में विद्यार्थियों को केवल शास्त्र नहीं पढ़ाए जाते थे, बल्कि उन्हें विभिन्न कलाओं, विद्याओं, कृषि, चिकित्सा, युद्ध-कौशल और जीवनोपयोगी अन्य आवश्यक कौशलों में भी दक्ष बनाया जाता था। इसका मूल उद्देश्य उन्हें आत्मनिर्भर नागरिक बनाना और समाज में सक्रिय सहभागिता के लिए तैयार करना था। इस पद्धति में 'जीवन जीने की कला' को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी व्यावहारिक दृष्टिकोण को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित करती है। यह नीति शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं मानती, बल्कि विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी ज्ञान और रोजगारोन्मुख कौशलों से युक्त बनाना चाहती है। इसके अंतर्गत कौशल विकास तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली को आपस में जोड़ने का स्पष्ट प्रयास किया गया है।

व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण— प्राचीन भारत में व्यावसायिक शिक्षा, जैसे कि बुनकरी, कुम्हारी, चिकित्सा, निर्माण कार्य आदि, गुरुकुल परंपरा या पारिवारिक प्रणाली के माध्यम से दी जाती थी। विद्यार्थी अपने गुरु से सीधे व्यावसायिक ज्ञान और जीवनोपयोगी कौशल अर्जित करते थे। एन.ई.पी. 2020 में कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा प्रारंभ करने का प्रस्ताव है जिसमें इंटर्नशिप को भी सम्मिलित किया गया है। इससे विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों से परिचित होने और भविष्य के लिए व्यावहारिक रूप से तैयार होने का अवसर मिलेगा। साथ ही, भारतीय पारंपरिक तकनीकों जैसे हस्तकला, मूर्तिकला, आयुर्वेद, वास्तुकला आदि को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा सकता है।

जीवन कौशलों का विकास— प्राचीन शिक्षा में जीवन कौशलों, जैसे— कर्तव्यानुभूति, अनुशासन, मानसिक संतुलन, तनाव प्रबंधन, योग, ध्यान आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता था। ये गुण विद्यार्थियों को समग्र रूप से जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करते थे। एन.ई.पी. 2020 भी इन मूल्यों को आवश्यक मानती है और संवाद कौशल, सहयोग, नवाचार, समस्या समाधान, रचनात्मकता जैसे 21वीं सदी के कौशलों को विद्यार्थियों में विकसित करने की बात करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में नीतिपरक ग्रंथ, महाकाव्य, धार्मिक ग्रंथ और दार्शनिक विचारधाराएँ इन गुणों के पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

उद्यमिता कौशल—प्राचीन भारतीय समाज में व्यक्ति अपने कौशल के बल पर आत्मनिर्भर और सफल उद्यमी बनता था। व्यापार और कुटीर उद्योग सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा थे। एन.ई.पी. 2020 विद्यार्थियों में नवाचार और उद्यमिता की भावना को विकसित करने पर बल देती है, ताकि वे केवल नौकरी पाने वाले नहीं बल्कि देने वाले भी बन सकें। भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यापारिक दृष्टिकोण, आर्थिक सिद्धांत, प्रबंधन व्यवहार और व्यावहारिक शिक्षाएँ, जैसे कि पंचतंत्र की कहानियाँ, विद्यार्थियों में व्यावसायिक सोच और आत्मनिर्भरता विकसित कर सकती हैं।

डिजिटल साक्षरता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण—प्राचीन भारत में भले ही डिजिटल तकनीक नहीं थी, लेकिन गणित, खगोल, चिकित्सा, धातुकर्म आदि क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियाँ वैज्ञानिक सोच और तर्कशीलता का परिचायक रही हैं। एन.ई.पी. 2020 में विद्यार्थियों को डिजिटल रूप से सशक्त, वैज्ञानिक दृष्टिकोण युक्त और नवाचार में सक्षम बनाने की बात की गई है। आई.के.एस. में निहित विश्लेषण, तर्क और विवेचन की परंपरा आधुनिक तकनीकी शिक्षण में वैचारिक गहराई और नैतिकता जोड़ सकती है।

प्रयोगात्मक क्रियान्वयन— इन कौशलों को प्रभावी रूप से शिक्षा प्रणाली में लागू करने के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या में इन्हें समेकित किया जाए। 'करके सीखना' प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम और अनुभवजन्य शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए। विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्रदान किए जाएँ जहाँ वे स्थानीय कारीगरों, शिल्पियों और विशेषज्ञों के साथ कार्य कर सकें। इससे वे न केवल कौशल अर्जित करेंगे, बल्कि अपने सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों से भी जुड़ेंगे। एन.ई.पी. 2020 कौशल विकास को शिक्षा का मूल उद्देश्य मानती है। जब यह विकास भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ समन्वय में होता है तब यह शिक्षा को अधिक सार्थक, व्यावहारिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाता है। इससे ऐसे विद्यार्थी विकसित होंगे जो ज्ञानवान ही नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर, विवेकशील और समाजोपयोगी नागरिक भी होंगे।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) को प्रभावी रूप से विद्यालयों में लागू करने हेतु शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है, ताकि वे इस प्रणाली के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की परिकल्पना, भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए उसे आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने की है। यद्यपि अधिकांश शिक्षक ऐसे शैक्षणिक संस्थानों से आए हैं, जहाँ उन्हें सीमित रूप में पढ़ाया गया था औपचारिकता पूर्ण करने के लिए। इस कारण उनके लिए एक सुव्यवस्थित और उद्देश्यपरक प्रशिक्षण कार्यक्रम आवश्यक हो गया है। इस संदर्भ में चार प्रमुख पहलुओं पर बल देना आवश्यक है— (क) ज्ञान अंतराल को भरना शिक्षकों को प्राचीन भारतीय गणित (जैसे— आर्यभट्ट, भास्कराचार्य), विज्ञान (जैसे— आयुर्वेद, खगोल, रसायन), दर्शन (जैसे— वेद, उपनिषद), कला और शिल्प के गहन ज्ञान से युक्त किया जाना चाहिए, ताकि

वे इन विषयों की आधुनिक प्रासंगिकता को समझ सकें; (ख) सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास— कई शिक्षकों में आई.के.एस. के प्रति गलत धारणाएँ या पूर्वग्रह हो सकते हैं जो पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण बने हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा वैज्ञानिकता, तर्कबुद्धि और व्यावहारिक अनुप्रयोगों को उभारते हुए इन पूर्वग्रहों को दूर किया जा सकता है; (ग) शिक्षाशास्त्र में नवाचार— आई.के.एस. को केवल तथ्यों के रूप में पढ़ाने से उसका वास्तविक मूल्य नहीं उभर पाएगा। अतः शिक्षकों को यह सीखना होगा कि आई.के.एस. को समग्र और बहु-विषयक दृष्टिकोण से कैसे पढ़ाया जाए जैसे कि अनुभवात्मक शिक्षा, परियोजना-आधारित शिक्षण, कहानी-कथन और कला-एकीकृत शिक्षण के माध्यम से; (घ) प्रेरणा और सशक्तीकरण— जब शिक्षक स्वयं आई.के.एस. के गहन ज्ञान और कौशल से युक्त होंगे, तो उनमें आत्मविश्वास और प्रेरणा स्वतः उत्पन्न होगी, जिससे वे अपने कक्षा-कक्षों में आई.के.एस. को प्रभावी रूप से लागू कर सकेंगे; (ङ) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करना— प्रशिक्षित शिक्षक ही यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आई.के.एस. समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाए और विद्यार्थियों को समग्र तथा संतोषजनक अधिगम अनुभव प्रदान करे।

शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं विकास हेतु उठाए गए प्रमुख कदम

भारत सरकार एवं विभिन्न शैक्षिक संस्थान शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास हेतु अनेक महत्वपूर्ण प्रयास कर रहे हैं, ताकि वे भारतीय ज्ञान प्रणाली को प्रभावी ढंग से समझ सकें और उसे शिक्षण में एकीकृत कर सकें। इस दिशा में सबसे पहले, भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किए जा रहे हैं जिनमें इसके सिद्धांतों, परंपरागत प्रयोगों एवं समसामयिक प्रासंगिकता पर केंद्रित गहन अध्ययन सम्मिलित होगा। साथ ही, डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे दीक्षा के माध्यम से ऑनलाइन पाठ्यक्रमों एवं प्रशिक्षण सामग्रियों को उपलब्ध कराया जा रहा है, ताकि शिक्षक कहीं से भी इनका लाभ उठा सकें। इसके अतिरिक्त, बी.एड. एवं डी.एल.एड. जैसे— शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में आई.के.एस. को एक अनिवार्य घटक के रूप में सम्मिलित किया जा रहा है जिससे भावी शिक्षक प्रारंभ से ही इसकी समझ विकसित कर सकें। भारतीय ज्ञान प्रणाली के विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं एवं पारंपरिक ज्ञान धारकों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है, जिससे शिक्षकों को विषय की गहराई से जानकारी मिल सके। निरंतर व्यावसायिक विकास (सी.पी.डी.) हेतु नियोजित रीफ्रेशर कोर्स एवं ऑनलाइन मॉड्यूल विकसित किए जा रहे हैं जिससे शिक्षक अपने ज्ञान व कौशल को नियमित रूप से अद्यतन कर सकें। अंततः शिक्षकों को स्थानीय स्तर पर अनुसंधान परियोजनाओं में भाग लेने और भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित शिक्षण अनुभवों का लेखन करने के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है, जिससे उनका व्यावहारिक ज्ञान भी समृद्ध हो सके।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण की पहलें

शिक्षकों का यह सशक्तीकरण भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) को शिक्षा की मुख्यधारा में एकीकृत करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। इससे यह सुनिश्चत होगा कि विद्यार्थी केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहें, बल्कि शिक्षकों के ज्ञान, अनुभव और सकारात्मक दृष्टिकोण से भी आई.के.एस. को सीखें और आत्मसात करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की परिकल्पना को साकार करने हेतु अनेक स्तरों पर योजनाएँ बनाई गई हैं और आवश्यक दिशानिर्देश भी तैयार किए गए हैं। इनमें प्रमुख हैं— शिक्षा के सभी स्तरों पर आई.के.एस. को पाठ्यक्रमों में समाहित करना; विशेषकर उच्चतर शिक्षा में यू.जी. या पी.जी. स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी को कम-से-कम 5 प्रतिशत अनिवार्य क्रेडिट आई.के.एस. आधारित पाठ्यक्रमों से जोड़ना। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों को स्वेच्छा से अधिक क्रेडिट लेने की अनुमति होगी और आई.के. एस. के न्यूनतम 50 प्रतिशत क्रेडिट भारत सरकार द्वारा नामित नोडल संस्थान के माध्यम से मान्यता प्राप्त होने चाहिए। इन पाठ्यक्रमों का माध्यम कोई भी भारतीय भाषा हो सकती है। शिक्षकों और विद्यार्थियों में आई.के.एस. के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु, पुनर्परीक्षित पाठ्यक्रम, प्रेरक गतिविधियाँ और उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों की भागीदारी को सशक्त किया जा रहा है। कलाकारों और उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच सहयोग स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि कला शिक्षा की ऐसी सशक्त संरचना विकसित की जा सके जिसमें शिक्षक, शोधकर्ता और अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ सम्मिलित होकर कला आधारित अनुभवों को औपचारिक शिक्षा से जोड़ सकें। इससे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और अनुभवशीलता को बढ़ावा मिलेगा।

जनसामान्य को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत से परिचित कराने हेतु विविध स्तरों पर बहुस्तरीय और बहुआयामी क्रेडिट आधारित मॉड्यूल प्रदान किए जा रहे हैं। इनमें मानव मूल्य, वेदांत, योग, आयुर्वेद, साहित्य, भाषाएँ, पुरातत्व, ऐतिहासिक स्थल, कलाएँ, भारतीय संगीत, नृत्य, नाट्य, दृश्य कलाएँ, चित्रकला एवं हस्तकला जैसे विविध विषयों को सम्मिलित किया गया है। आई.के.एस. डिवीजन ने विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों के अग्रणी विचारकों और विशेषज्ञों के सहयोग से 'भारत@2047' की परिकल्पना के तहत एक रोडमैप तैयार किया है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनःस्थापना सुनिश्चित हो सके। आई.के.एस. पर 5200 से अधिक इंटरफेस बनाए गए हैं और प्राचीन गणित, नगर नियोजन, जल संसाधन प्रबंधन, चिकित्सा जैसे विषयों पर उत्कृष्ट शोध की सुविधाएँ विकसित की गई हैं।

वर्तमान में 32 केंद्र आई.के.एस. आधारित शोध, शिक्षा और प्रसार के लिए स्थापित किए जा चुके हैं। 18 से 20 क्रेडिट पूरे करने वाले विद्यार्थियों को

माइनर डिग्री देने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त, 22 अनुसूचित भाषाओं में संसाधनों और पाठ्यक्रमों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु टेक्नोलॉजी, भाषा माध्यम और अनुभवात्मक प्लेटफॉर्म्स को सम्मिलित किया जा रहा है जिससे क्षेत्रीय भाषाओं में व्यक्तिगत प्रशिक्षण, डिजिटल संसाधन और एफ.एन.ओ.एस. अनुरूप सामग्री उपलब्ध कराई जा सके।

यह प्रयास हमारे विषयक ज्ञान को पुनः जागरूक कर, वर्तमान समय की चुनौतियों से निपटने में अनुसंधान को प्रोत्साहित करेगा। मुख्यधारा की शिक्षा में ऐसे समावेश से हमारे ज्ञान संसाधन समृद्ध होंगे और परंपरागत एवं आधुनिक दृष्टिकोणों का संतुलन, विद्यार्थियों को आत्मसम्मान, पहचान और सांस्कृतिक जागरूकता के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान प्रणाली का कार्यान्वयन— चुनौतियाँ और समाधान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) के एकीकरण का उद्देश्य न केवल शिक्षा की भारतीय आत्मा को पुनर्स्थापित करना है, बल्कि विद्यार्थियों में कर्तव्यबोध, नैतिकता और सांस्कृतिक जागरूकता, जैसे— गुणों का भी विकास करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों के पुनरावलोकन, शिक्षकों के प्रशिक्षण, मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव, शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन और समुदाय की सहभागिता जैसे कई आयामों पर व्यवस्थित प्रयास आवश्यक हैं। पाठ्यक्रम और सामग्री विकास की दृष्टि से, वर्तमान में जो पाठ्यचर्या है वह मुख्यतः पाश्चात्य ढाँचों पर आधारित है। ऐसे में आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को विषयवस्तु में नये रूप में जोड़ा जाए, जैसे कि गणित में वैदिक गणित और भास्कराचार्य के सिद्धांत या विज्ञान में आयुर्वेद एवं प्राचीन खगोलशास्त्र। विषय-विशिष्ट मॉड्यूल, जैसे 'भारतीय विज्ञान का इतिहास' या 'भारतीय दर्शनों के मूल सिद्धांत', इस दिशा में उपयोगी हो सकते हैं। साथ ही, गुणवत्ता-युक्त वीडियो, एनिमेशन, इंटरएक्टिव वेबसाइट्स और डिजिटल लाइब्रेरी जैसे संसाधनों का विकास भी आवश्यक है। यह सुनिश्चित करना होगा कि यह सामग्री क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध हो जिससे अधिकतम पहुँच संभव हो सके। शिक्षकों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें आई.के.एस. की गहराई, इसे आधुनिक विषयों से जोड़ने की कला, और उपयुक्त शिक्षण पद्धतियों की जानकारी हो। इसके लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाए जिनमें आई.के.एस. आधारित शिक्षण रणनीतियों और नवीन अनुप्रयोगों पर ध्यान दिया जाए। शिक्षकों को संदर्भ सामग्री, पाठ्यपुस्तकें और प्रकरण अध्ययन जैसे संसाधनों तक सरल पहुँच उपलब्ध कराई जाए। साथ ही, विद्यालय स्तर पर कार्यशालाओं और विचार मंचों के माध्यम से शिक्षकों को परस्पर अनुभव साझा करने और चिंतनशील संवाद हेतु प्रोत्साहित किया जाए। उच्च शिक्षा संस्थानों में आई.के.एस. में विशेषज्ञता प्राप्त प्रशिक्षकों और शोधकर्ताओं का विकास इस दिशा में दीर्घकालिक बदलाव ला सकता है।

मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन भी आवश्यक है। वर्तमान तथ्यों पर आधारित मूल्यांकन प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेश की संभावनाएँ सीमित हैं। इसके लिए ऐसी परियोजनाएँ और शोध गतिविधियाँ आरंभ की जानी चाहिए जिनमें विद्यार्थियों के विश्लेषणात्मक सोच, सांस्कृतिक समझ और संवाद कौशल का आकलन हो। विद्यार्थियों को आई.के.एस. के आधार पर प्रस्तुतियों, शोध कार्यों और बहसों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए जिससे उनके अनुभवजन्य अधिगम को महत्व मिले। जहाँ संभव हो, वहाँ व्यावहारिक गतिविधियों और परियोजनाओं के माध्यम से भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

शोध और नवाचार को बढ़ावा देने हेतु अभी भी कई क्षेत्रों में गंभीर अनुसंधान की आवश्यकता है, जिससे आई.के.एस. को वैज्ञानिक आधार और आधुनिक उपादेयता प्रदान की जा सके। विश्वविद्यालयों में आई.के.एस. केंद्र और उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएँ जो विषयांतरणीय शोध कार्यों के लिए प्रोत्साहन दें। इन केंद्रों के माध्यम से विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को वित्तीय सहायता, छात्रवृत्तियाँ और विषय विशेषज्ञों से मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाए। साथ ही, आई.के.एस. को आधुनिक विज्ञान, तकनीक और सामाजिक विज्ञानों से जोड़ने के लिए अंतर्विषयी सहयोग को भी बढ़ावा मिलना चाहिए। समुदाय और नीति-निर्माताओं की भागीदारी इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। कई बार भारतीय ज्ञान प्रणाली को लेकर मिथक और संकुचित दृष्टिकोण समाज में विद्यमान होते हैं। ऐसे में इसकी भूमिका और महत्व पर जन-जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। विद्यालयों और कॉलेजों में समुदाय और विशेषज्ञों के साथ खुली चर्चाएँ, कार्यशालाएँ तथा प्रेरक कथाएँ साझा की जाएँ, ताकि सामाजिक स्वीकृति और उत्साह दोनों बढ़ सकें। आई.के.एस. से जुड़े नवाचारों की प्रेरक कहानियों को मंच प्रदान किया जाए, जिससे इस पहल की सकारात्मक छवि समाज में निर्मित हो सके।

इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन की दिशा में पाठ्यचर्या, प्रशिक्षण, मूल्यांकन, शोध और समुदाय— प्रत्येक स्तर पर संगठित, सक्रिय और सतत प्रयास आवश्यक हैं, तभी यह पहल केवल औपचारिक न रहकर वास्तव में एक सहक्रियात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकेगी।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली का सफल कार्यान्वयन एक लंबी प्रक्रिया होगी, जिसमें निरंतर प्रयास, समन्वय और सभी हितधारकों (विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशासकों, नीति-निर्माताओं और शोधकर्ताओं) के बीच सहयोग की आवश्यकता होगी। यह केवल एक शैक्षिक सुधार नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और बौद्धिक पुनर्जागरण है, जो भारत को उसकी जड़ों से जोड़ते हुए 21वीं सदी के लिए तैयार करेगा।

एन.ई.पी. 2020 और आई.के.एस. की यह सहभागिता भारत को एक बार फिर ज्ञान-विज्ञान के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखती है। यह हमें न केवल अपनी जड़ों से जोड़ेगी,

बल्कि हमें वैश्विक चुनौतियों का सामना करने हेतु स्वदेशी और नवाचारी समाधान विकसित करने में भी सक्षम बनाएगी। जब हमारे विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व के साथ आधुनिक ज्ञान से युक्त होंगे तभी वे एक सशक्त और स्वावलंबी भारत का निर्माण कर पाएँगे। यह एक ऐसा परिवर्तन है जो केवल शैक्षिक व्यवस्था तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि हमारे समाज और राष्ट्र को एक नई दिशा देगा— जहाँ ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज सर्वोपरि होगी। साथ ही यह हमें केवल नौकरी पाने वाले नहीं, बल्कि जागरूक नागरिक और उत्तरदायी मानव बनने की ओर प्रेरित करेगा।

संदर्भ

शिक्षा मंत्रालय. 2022. *इंडियन नॉलेज सिस्टम (आई.के.एस.) एंड नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (एन.ई.पी.) 2020* : ए *सायनर्जिस्टिक अप्रोच*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in